Govardhanram Tripathi

Govardhanram Madhavram Tripathi, born on 20th October 1855, at Nadiad in Gujarat, was a renowned novelist of the late 19th and early 20th centuries, who wrote mostly in Gujarati language. He regarded his childhood years and the first few years of his life as the happiest period of his life. After finishing his Graduation in 1875, he studied Law and completed L.L.B. in 1883, despite poor health and financial difficulties. He started working as a lawyer in Bombay High Court in June 1884. He did remarkably well, despite refusing, as a matter of principle, lucrative assignments offered to him. During this period, he also did an incredibly large amount of literary work of highest merit.

Shri Tripathi is known for his four volume novel, Saraswatichandra, which has the distinction of being one of the most widely read books of all times in Gujarati Literature. "Saraswatichandra" Part I was published in 1887 followed by "Sneha-mudra" (the Signet of Love), a collection of poems in 1889. Saraswatichandra Part II was published in 1892 and it was immensely popular. The event was most unusual and unparalleled in Gujarat. The IIIrd and IVth Parts of *Saraswatichandra* were published in 1898 and 1901 respectively.

Retiring early, at the age of 43, he returned to his hometown and continued to contribute to Gujarati litrature and public service.

Shri Govardhanram Tripathi took up an active role in the Indian National Congress during 1902. In 1905, he was elected as the first president of the Gujarati Sahitya Parishad. He also wrote various articles and essays in the papers 'Vasant' and 'Samalochak', which were published as books later on. Shri Govardhanram Tripathi was also fluent in English, and wrote 'Scrap Book' in the language. Some of the other works by Shri Govardhanram Tripathi are *Leelavati Jeevankala, Saakshar Jeevan, Navalram Nu Kavi Jeevan, Dayaram No Akshardeh,* and *Sadavastu Vichar.*

The period from 1885 to 1915 is called "Govardhan-Yug" or "Govardhan-Era" in Gujarati literature. Shri Govardhanram Tripathi died in Mumbai on the evening of 4 January 1907.

The Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp on Govardhanram Tripathi.

Credits:-

Text	: Based on the material received from Gujarat Sahitya Parishad
Stamp/ FDC/ Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India



गोवर्धनराम त्रिपाठी
GOVARDHANRAM TRIPATHI

विवरणिका BROCHURE

गोवर्धनराम त्रिपाठी

गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी का जन्म २० अक्टूबर, १८५५ में नडियाद, गुजरात में हुआ था। वे १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और २०वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के एक प्रसिद्ध उपन्यासकार थे, जिन्होंने अधिकांश लेखन कार्य गुजराती भाषा में किया। वे अपने बाल्यकाल और अपने जीवन के आरंभिक कुछ वर्षों को अपने जीवन का खुशगवार समय मानते थे। वर्ष १८७५ में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, उन्होंने विधि (लॉ) का अध्ययन किया और वर्ष १८८३ में एलएलबी की पढ़ाई पूरी की। जून १८८४ में उन्होंने बम्बई उच्च न्यायालय में वकील के रूप में कार्य करना आरंभ किया। कई लाभप्रद अवसरों को सैद्धांतिक रूप से स्वीकार नहीं करने के बावजूद, वे काफी सफल रहे। इस अवधि के दौरान उन्होंने अविश्वसनीय रूप से बड़ी मात्रा में उत्कृष्ट साहित्य रचना की।

श्री त्रिपाठी अपने चार-खंडों वाले उपन्यास,'सरस्वतीचंद्र' के लिए जाने जाते हैं, जिसे गुजराती साहित्य की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है। 'सरस्वतीचंद्र' भाग-I को वर्ष १८८७ में प्रकाशित किया गया, इसके बाद 'स्नेहमुद्रा', काव्य-संकलन, को वर्ष १८९८ में प्रकाशित किया गया। 'सरस्वतीचंद्र' भाग-II को वर्ष १८९२ में प्रकाशित किया और यह अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। गुजरात में यह एक अत्यंत असाधारण और अतुलनीय घटना थी। 'सरस्वतीचंद्र' के भाग-III और IV को क्रमश: १८९८ और १९०१ में प्रकाशित किया गया।

उन्होंने ४३ वर्ष की कम आयु में सेवानिवृत्ति ले ली और अपने गृहनगर लौट आए, जहां उन्होंने गुजराती साहित्य और लोक सेवा में योगदान देना जारी रखा।

श्री गोवर्धनराम त्रिपाठी ने वर्ष १९०२ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय भूमिका निभाई। वर्ष १९०५ में वे गुजराती साहित्य परिषद के प्रथम अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए। उन्होंने 'वसंत' और 'समालोचक' पत्रों के लिए विभिन्न लेख और निबंध लिखे, जिन्हें बाद में, पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। श्री गोवर्धनराम त्रिपाठी का अंग्रेजी भाषा पर भी पूरा अधिकार था और उन्होंने इस भाषा में 'स्क्रैपबुक' की रचना की। श्री गोवर्धनराम त्रिपाठी की अन्य रचनाओं में 'लीलावती जीवनकला','साक्षर जीवन', नवलराम नु कवि जीवन','दयाराम नो अक्षरदेह' और 'सदावस्तु विचार' उल्लेखनीय हैं।

गुजराती साहित्य के इतिहास में वर्ष १८८५ से १९१५ तक की अवधि को "गोवर्धन-युग" कहा जाता है। ०४ जनवरी, १९०७ को मुंबई में गोवर्धनराम त्रिपाठी का देहांत हो गया।

डाक विभाग गोवर्धनराम त्रिपाठी पर स्मारक डाक टिकट जारी कर प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : गुजरात साहित्य परिषद द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/ प्रथम दिवस आवरण/ विरूपण : श्रीमति अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.0 लाख
Stamps Printed	:	0.30 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00